रविवार एवं चौघड़िया मुहूर्त्त

डॉ. रामदेव साहू
प्रोफेसर (वेदविज्ञान)
विश्वगुरु दीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

रविवार को पृथ्वी का घूर्णन पूर्वदिशा के केन्द्रबिन्दु से होता है। उस समय उस केन्द्रबिन्दु पर सूर्य विद्यमान होते हैं तथा सूर्य एवं पृथ्वी के बीच अन्य कोई ग्रह-उपग्रह नहीं होता। चित्र में पूर्व दिशा के इस केन्द्र बिन्दु को 0 या 360 से दर्शाया गया है। पृथ्वी के घूर्णन का प्रारम्भ सूर्य की संस्थिति के साथ हो रहा है, किन्तु पृथ्वी के घूर्णन एवं सूर्य की गति के कारण सूर्य की दिशा में भी परिवर्तन आता रहता है। पृथ्वी के घूर्णन में जब तक पृथ्वी 221/2 पर नहीं पहुँचती तब तक सूर्य एवं पृथ्वी का व्यवधानरहित दृष्टि सम्बन्ध बना रहता है। इस व्यवधान रहित दृष्टि सम्बन्ध को कालावधि। घंटा 30 मिनट है। अर्थात् स्थानीय सूर्योदय से लेकर 1 घंटे 30 मिनट की अवधि में सूर्य का दृष्टि सम्बन्ध पृथ्वी से बना हुआ है। सूर्य की पूर्ण दृष्टि विच्छेदात्मक होती है, अतः पृथ्वीवासियों को यह समय हानिकारक होता है। इस समयावधि को ही उपर्युक्त चौघड़िया मुहूर्त में 'उद्वेग' या 'उत्पात' संज्ञा द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।

रविवार को घूर्णन करती हुई पृथ्वी अब 221/2 पर पहुँचती है, तब पृथ्वी से शुक्र का दृष्टि सम्बन्ध प्रारम्भ हो जाता है। शुक्र का यह सम्बन्ध भी व्यवधानरहित होता है तथा इस सम्बन्ध की कालावधि भी। घंटा 30 मिनट की होती है। शुक्र भी गति शील ग्रह है वह सूर्य का परिक्रमण कर रहा है अतः दृष्टि सम्बन्ध भी अगले 221/2° अर्थात् से 45 तक नियमतः बना रहता है। शुक्र की दृष्टि सौम्य होती है क्योंकि उसमें उष्मा रहित प्रकाश होता है, जो पृथ्वीवासियों को हानिकारक नहीं होता, अतः पृथ्वीवासियों को यह समय शुभफलदायक होता है। शुक्र की चंचलता के कारण इस समयावधि को ही उपर्युक्त चौघड़िया मुहूर्त चक्र में 'चर' या 'चंचल' संज्ञा द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।

रविवार को घूर्णन करती हुई पृथ्वी जब 45 पर पहुँचती है, तब पृथ्वी से बुध का दृष्टि सम्बन्ध प्रारम्भ हो जाता है। बुध का यह सम्बन्ध भी व्यवधान रहित होता है तथा इस सम्बन्ध की कालावधि भी 1 घंटा 30 मिनट की होती है। बुध भी गतिशील ग्रह है तथा वह भी सूर्य का परिक्रमण कर रहा है। चन्द्रात्मज होने से बुध शीतप्रकृति का सौम्य ग्रह है तथा इसमें भी उष्मा रहित प्रकाश होता है, जो पृथ्वीवासियों को हानिकारक नहीं होता अपितु शुभफलदायक होता है, अतः इसकी कालावधि को भी शुभ फलदायक माना गया है। बुध के व्यापारादि में लाभकारक होने से बुध की इस समयावधि को ही उपर्युक्त चौघडिया चक्र में लाभ संज्ञा से निर्दिष्ट किया गया है।

रविवार को घूर्णन करती हुई पृथ्वी जब 67.5 पर पहुँचती है, तब पृथ्वी से चन्द्रमा का दृष्टि सम्बन्ध प्रारम्भ हो जाता है। चन्द्रमा का यह सम्बन्ध भी व्यवधान रहित होता है तथा इस सम्बन्ध की कालावधि भी 1 घंटा 30 मिनट की होती है। चन्द्रमा अत्यन्त तीव्र गति से चलने वाला ग्रह है। वह सूर्य का परिक्रमण न कर पृथ्वी का परिक्रमण कर रहा है। चन्द्रमा नितान्त शीत प्रकृति का ग्रह है। इसमें उष्मा का नितान्त अभाव है, अतः यह हानिकारक नहीं है तथा सर्वश्रेष्ठ फलदायक है, अतः इसकी कालावधि को भी शुभफल दायक माना गया है। चन्द्रमा सोम (अमृत) का अधिष्ठाता है तथा सूर्य को भी अमृत प्रदान करता है अतः चन्द्रमा की इस समयावधि को उपर्युक्त चौघड़िया चक्र में 'अमृत' संज्ञा से निर्दिष्ट किया गया है।

रविवार को घूर्णन करती हुई पृथ्वी जब 90 पर पहुँचती है, तब पृथ्वी से शनि का दृष्टि सम्बन्ध प्रारम्भ हो जाता है। शनि का यह दृष्टि सम्बन्ध भी व्यवधान रहित होता है तथा इस सम्बन्ध की कालावधि भी 1 घंटा 30 मिनट की होती है। शनि शनैः शनैः चलने वाला ग्रह है तथा यह भी सूर्य का परिक्रमण कर रहा है। शनि क्रूर प्रकृति का ग्रह है तथा इसकी दृष्टि विनाश एवं विक्षोभ की कारक होती है, अतःइसकी कालावधि को अशुभ फलदायक माना गया है। अपनी क्रूर प्रकृति के कारण काल की भाँति भय उत्पन्न करने वाला होने से शनि की इस समयावधि को उपर्युक्त चौघड़िया चक्र में 'काल' संज्ञा से निर्दिष्ट किया गया है।

रविवार को घूर्णन करती हुई पृथ्वी जब 112.5 पर पहुँचती है, तब पृथ्वी से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध स्थापित जाता है। बृहस्पति का यह दृष्टि सम्बन्ध भी व्यवधान रहित होता है तथा इस सम्बन्ध की कालावधि भी 1 घंटा 30 मिनट की होती है। बृहस्पति भी मन्दगति वाला ग्रह है तथा यह भी सूर्य का परिक्रमण कर रहा है। बृहस्पति की दृष्टि मांगलिक तथा सफलता की कारक होती है। बृहस्पति देवगुरु है तथा दिव्य सद्गुणों का निर्देश है, अतः

इसकी कालावधि को शुभ की प्रेरक एवं शुभफलदायक माना गया है तथा उपर्युक्त चौघड़िया चक्र में 'शुभ' संज्ञा से निर्दिष्ट किया गया है।

रविवार को घूर्णन करती हुई पृथ्वी जब 135 पर पहुँचती है, तब पृथ्वी से मंगल का दृष्टि सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। मंगल का यह सम्बन्ध भी व्यवधान रहित होता है तथा इस समयन्ध की कालावधि भी 1 घंटा 30 मिनट की होती है। मंगल भी गतिशील ग्रह है तथा वह भी सूर्य का परिक्रमण कर रहा है। मंगल भी क्रूर प्रकृति का ग्रह है। इसमें अग्नि की सर्वाधिक विद्यमानता होती है तथा इसका प्रकाश सूर्य के प्रकाश से भी अधिक तेजोमय होता है, जो पृथ्वीवासियों के लिए अशुभफलदायक होता है। मंगल की दृष्टि भी विच्छेद विक्षोभ विनाश एवं पीडा की कारक है, अतः मंगल के सम्बन्ध की इस समयावधि को ही उपर्युक्त चौघड़िया चक्र में 'रोग' संज्ञा द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।

रविवार को घूर्णन करती हुई पृथ्वी जब 157.5 पर पहुंचती है तब पृथ्वी से पुनः सूर्य का दृष्टि सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। अतः पुनः 1 घंटा 30 मिनट की अवधि पर्यन्त सूर्य को हानिकारिक प्रभाव पृथ्वीवनियाँ को प्राप्त होता है। अतः चौघडिया चक्र में पुनः 'उद्वेग' संज्ञा से इसं अंकित किया गया है। दिवसकाल का यह अन्तिम आठवाँ मुहूर्त है। इसके पश्चात् रात्रि का आरम्भ बृहस्पति के दृष्टि सम्बन्ध से प्रारम्भ होता है। अतः रात्रिकाल का प्रथम मुहूर्त 'शुभ' संज्ञा से निर्दिष्ट किया गया है। दिवाकाल की भाँति ही रात्रिकाल के मुहूर्त भी 1 घंटा 30 मिनट की अवधि के ही होते हैं। बृहस्पति का यह दृष्टिसम्बन्ध तब स्थापित होता है जब पृथ्वी 180 पर पहुँच जाती है तथा 202.5 पर पहुँचने तक यथावत् बना रहता है।

इसके बाद पृथ्वी जब 202.5 पर पहुंचती है तो चन्द्रमा से पुनः दृष्टि सम्बन्ध होने से 'अमृत' संज्ञक चौघडिया मुहुर्त रात्रि के दूसरे मुहूर्त के रूप में उपस्थित होता है। इसी क्रम पृथ्वी के 225 पर पहुँचने पर पुनः शुक्र से दृष्टि सम्बन्ध होते पर 'चर' संज्ञक मुहूर्त होता है। तत्पश्चात् पृथ्वी के 247.5 पर पृथ्वी पहुँचने पर पुनः मंगल से दृष्टि सम्बन्ध होने पर 'रोग' संज्ञक अशुभ मुहूर्त होता है। तत्पश्चात् पृथ्वी के 270 पर पहुँचने पर शनि से दृष्टि सम्बन्ध होने पर काल संज्ञक अशुभ मुहूर्त होता है। तत्पश्चात् 292.5 पर पृथ्वी का बुध से दृष्टि सम्बन्ध होने पर 'लाभ' संज्ञक शुभ मुहूर्त होता है। तत्पश्चात् 315 पर पृथ्वी का पुनः सूर्य से दृष्टि सम्बन्ध होने पर 'उद्वेग' संज्ञक अशुभ मुहूर्त होता है। इसके पश्चात् रविवार की रात्रि को अन्तिम मुहूर्त पृथ्वी के 337 5 पर पहुँचने पर पुनः बृहस्पति से सम्बन्ध होने पर 'शुभ' संज्ञा वाला होता है।